© AUG 2024 | IRE Journals | Volume 8 Issue 2 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV8I2-1722929

पटना जिले की उच्चतर माध्यमिक छात्राओं के सशक्तिकरण पर शैक्षिक, पारिवारिक एवं सामाजिक कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

संजय कुमार[1], डॉ. मनोज कुमार[2]
[1] शोधार्थी, शिक्षा विभाग, साईं नाथ विश्वविद्यालय
[2] एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, साईं नाथ विश्वविद्यालय

सार- ***यह अध्ययन पटना, बिहार में उच्चतर माध्यमिक छात्राओं के सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले बहुआयामी कारकों की जाँच करता है। आठ विद्यालयों की 320 छात्राओं (आयु 16–18 वर्ष) के साथ मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए सशक्तिकरण और चार प्रमुख निर्धारकों—गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, सामाजिक समर्थन तंत्र तथा पाठ्येतर गतिविधियों में भागीदारी—के बीच संबंधों का विश्लेषण किया गया। मात्रात्मक निष्कर्षों में सशक्तिकरण का गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच (r=0.64, p<0.001), सामाजिक-आर्थिक स्थिति (r=0.48, p<0.001) और सामाजिक समर्थन (r=0.59, p<0.001) के साथ महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। पारिवारिक समर्थन विशेष रूप से प्रभावशाली रहा। समग्र पाठ्येतर भागीदारी के परिणाम मिश्रित रहे, किन्तु नेतृत्व-उन्मुख गतिविधियों का सशक्तिकरण के साथ मजबूत संबंध (r=0.57, p<0.001) पाया गया। बहु-प्रतिगमन विश्लेषण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच, मातृ शिक्षा, पारिवारिक समर्थन, नेतृत्व गतिविधि भागीदारी और शिक्षक समर्थन से युक्त मॉडल ने समग्र सशक्तिकरण स्कोर में 63% विविधता की व्याख्या की। 40 गहन साक्षात्कारों के गुणात्मक डेटा ने छात्राओं की एजेंसी और आकांक्षाओं के विकास में मातृ शिक्षा, शिक्षक परामर्श तथा महिला रोल मॉडल की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। निष्कर्ष संकेत करते हैं कि छात्राओं के सशक्तिकरण के लिए शैक्षिक पहुँच के साथ पारिवारिक जुड़ाव, नेतृत्व विकास और लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण प्रथाओं को समेकित करने वाला बहुआयामी दृष्टिकोण आवश्यक है।***

मुख्य शब्द : महिला सशक्तिकरण, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा, बिहार, सामाजिक समर्थन, नेतृत्व विकास।

I. परिचय

भारत में किशोर लड़कियों का सशक्तिकरण एक महत्त्वपूर्ण विकासात्मक प्राथमिकता है, विशेषकर बिहार जैसे राज्यों में, जहाँ अनेक नीतिगत हस्तक्षेपों के बावजूद शैक्षिक परिणामों में लैंगिक असमानताएँ स्पष्ट बनी हुई हैं। यह अध्ययन बिहार की राजधानी पटना में उच्चतर माध्यमिक छात्राओं के सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले बहुआयामी कारकों की जाँच करता है। हाल के दशकों में साक्षरता दर में सुधार के बावजूद इस क्षेत्र की लड़कियों को सामाजिक मानदंडों, आर्थिक बाधाओं और प्रणालीगत शैक्षिक चुनौतियों सहित कई अवरोधों का सामना करना पड़ता है। पटना के शहरी शैक्षिक संदर्भ पर ध्यान केन्द्रित कर यह अध्ययन समझने का प्रयास करता है कि विकास के इस महत्त्वपूर्ण चरण में विभिन्न कारक लड़कियों की एजेंसी, निर्णय लेने की क्षमता और भविष्य की आकांक्षाओं को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। अध्ययन का केंद्रीय शोध प्रश्न है: "पटना, बिहार में उच्चतर माध्यमिक छात्राओं के बीच सशक्तिकरण के प्रमुख निर्धारक क्या हैं, और वे उनके शैक्षिक तथा व्यक्तिगत विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?" अध्ययन चार प्रमुख मान्यताओं पर आधारित है: (i) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच सशक्तिकरण के स्तर से सकारात्मक रूप से संबंधित है; (ii) सामाजिक-आर्थिक स्थिति सशक्तिकरण पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती है; (iii) परिवार, साथियों और शिक्षकों से प्राप्त सामाजिक समर्थन सशक्तिकरण के परिणामों को प्रभावित करता है; तथा (iv) पाठ्येतर गतिविधियों में भागीदारी सशक्तिकरण को बढ़ाती है। इन संबंधों के अनुभवजन्य मापन और विश्लेषण के माध्यम से अध्ययन का उद्देश्य छात्राओं के सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारकों की पहचान करना है।

अध्ययन का दायरा पटना जिले के सरकारी और निजी संस्थानों में उच्चतर माध्यमिक शिक्षा (कक्षा 11–12) में नामांकित छात्राओं तक सीमित है। शहरी फोकस पटना के अपेक्षाकृत विकसित शैक्षिक परिवेश की उपयोगी समझ प्रदान करता है, किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों तक निष्कर्षों के सामान्यीकरण को सीमित करता है। इसके अतिरिक्त, डेटा

संग्रह की क्रॉस-सेक्शनल प्रकृति समय के साथ होने वाले विकास के बजाय एक निश्चित समय-बिंदु पर सशक्तिकरण की स्थिति को दर्शाती है।

II. साहित्य की समीक्षा

महिला सशक्तिकरण पर उपलब्ध शोध कई सैद्धांतिक रूपरेखाओं से प्रेरित है। अमर्त्य सेन का क्षमता दृष्टिकोण सशक्तिकरण को केवल आर्थिक उन्नति न मानकर स्वतंत्रता और क्षमताओं के विस्तार के रूप में देखता है। यह दृष्टिकोण बिहार जैसे संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहाँ शैक्षिक पहुँच उपलब्ध होने पर भी सांस्कृतिक बाधाएँ लड़कियों के क्षमता-विकास को सीमित कर सकती हैं। इसी प्रकार, बंडुरा का सामाजिक-संज्ञानात्मक सिद्धांत यह समझने के लिए आधार प्रदान करता है कि आत्म-प्रभावकारिता—जो सशक्तिकरण का एक प्रमुख घटक है—पर्यावरणीय प्रभावों और व्यक्तिगत एजेंसी के माध्यम से कैसे विकसित होती है। नारीवादी दृष्टिकोण यह समझने में सहायक हैं कि लिंग के साथ जाति, वर्ग और धर्म जैसी सामाजिक पहचानें शैक्षिक अनुभवों को किस प्रकार आकार देती हैं।

अनुभवजन्य अध्ययनों में किशोर लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि और सशक्तिकरण संकेतकों के बीच प्रायः सकारात्मक संबंध पाए गए हैं। नंदा, दत्ता और दास (2020) ने बिहार में माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने और विलंबित विवाह के बीच महत्त्वपूर्ण संबंध का उल्लेख किया। शर्मा और सुजाता (2019) ने दर्शाया कि शैक्षिक हस्तक्षेप आगे की शिक्षा तथा करियर विकल्पों से जुड़े निर्णय लेने की क्षमता में सुधार कर सकते हैं। पटेल (2021) ने माध्यमिक स्तर पर लड़कियों में विद्यालय छोड़ने की समस्या पर ध्यान आकर्षित किया, जबकि गुप्ता (2021) ने कक्षा में लैंगिक गतिशीलता और पक्षपात का अध्ययन किया। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि केवल नामांकन बढ़ाना पर्याप्त नहीं है; शिक्षा की गुणवत्ता, लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण और समर्थन तंत्र भी आवश्यक हैं।

इस अध्ययन में सशक्तिकरण को पाँच आयामों वाले बहुआयामी निर्माण के रूप में परिचालित किया गया है: शैक्षिक सशक्तिकरण (शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता, शैक्षिक आकांक्षाएँ), मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण (आत्मसम्मान, आत्मविश्वास), सामाजिक सशक्तिकरण (पारस्परिक कौशल, सामुदायिक जुड़ाव), आर्थिक सशक्तिकरण (वित्तीय साक्षरता, करियर आकांक्षाएँ) तथा शारीरिक सशक्तिकरण (शारीरिक स्वायत्तता, स्वास्थ्य ज्ञान)। यह व्यापक दृष्टिकोण सशक्तिकरण को केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित न रखकर किशोर छात्राओं के जीवन-अनुभवों की जटिलता को समाहित करता है।

III. शोध-विधि

अध्ययन में निष्कर्षों के त्रिकोणीकरण और व्यापक समझ के लिए मात्रात्मक सर्वेक्षण तथा गुणात्मक साक्षात्कार को मिलाकर मिश्रित-पद्धति शोध डिज़ाइन अपनाया गया। प्रतिभागियों में पटना के 8 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से यादृच्छिक रूप से चुनी गई 320 छात्राएँ शामिल थीं। स्तरीकृत नमूना-विधि के माध्यम से सरकारी और निजी विद्यालयों का आनुपातिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया। प्रतिभागियों की आयु 16–18 वर्ष थी तथा वे विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से थीं; इनमें 62% शहरी परिवारों से और 38% उप-शहरी क्षेत्रों से विद्यालय आने वाली छात्राएँ थीं।

डेटा संग्रह के लिए मान्य पैमानों से अनुकूलित और पायलट परीक्षण के माध्यम से परिष्कृत 48-आइटम सशक्तिकरण प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें पाँचों सशक्तिकरण आयामों को मापा गया। सामाजिक-आर्थिक डेटा के लिए माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय, घरेलू संपत्ति और मासिक आय से संबंधित सूचनाएँ एक मानकीकृत पारिवारिक संसाधन प्रश्नावली से एकत्र की गईं। शैक्षिक पहुँच और गुणवत्ता का आकलन विद्यालयी आधारभूत संरचना, शिक्षक-छात्र अनुपात, अधिगम संसाधनों और शैक्षणिक प्रदर्शन संकेतकों के आधार पर किया गया। सामाजिक समर्थन के लिए किशोरों हेतु अनुकूलित बहु-आयामी सामाजिक समर्थन स्केल तथा पाठ्येतर भागीदारी के लिए विद्यालय एवं समुदाय-आधारित गतिविधियों की सूची का उपयोग किया गया।

डेटा संग्रह में संस्थागत अनुमति, माता-पिता की सहमति और प्रतिभागियों की स्वीकृति सहित नैतिक प्रोटोकॉल का पालन किया गया। महिला अनुसंधान सहायकों ने गोपनीय वातावरण में सर्वेक्षण संचालित किए तथा आवश्यकता के अनुसार स्थानीय भाषा विकल्प उपलब्ध कराए। गुणात्मक घटक के लिए प्रारंभिक विश्लेषण से पहचाने गए विविध सशक्तिकरण प्रोफाइल का प्रतिनिधित्व करने वाली 40

छात्राओं के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार आयोजित किए गए। मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण वर्णनात्मक आँकड़ों, सहसंबंध, बहु-प्रतिगमन और संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग से किया गया। गुणात्मक डेटा का विषयगत विश्लेषण NVivo सॉफ्टवेयर की सहायता से किया गया और व्याख्यात्मक विश्वसनीयता के लिए स्वतंत्र कोडिंग का उपयोग किया गया।

तालिका 1: पटना में उच्चतर माध्यमिक छात्राओं के बीच सशक्तिकरण आयामों के वर्णनात्मक आँकड़े (N=320)

सशक्तिकरण आयाम	औसत स्कोर (0–100)	मानक विचलन	सरकारी विद्यालय औसत (n=180)	निजी विद्यालय औसत (n=140)	p-मूल्य
शैक्षिक सशक्तिकरण	74.2	10.3	70.5	78.9	<0.01
मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण	66.8	13.5	63.2	71.4	<0.01
सामाजिक सशक्तिकरण	65.7	11.8	62.1	70.4	<0.01
आर्थिक सशक्तिकरण	59.3	15.7	55.8	63.9	<0.01
शारीरिक सशक्तिकरण	62.8	14.2	58.6	68.1	<0.001
समग्र सशक्तिकरण	68.4	12.6	64.2	73.7	<0.001

तालिका 1 दर्शाती है कि सभी सशक्तिकरण आयामों—शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक और शारीरिक—में निजी विद्यालयों की छात्राओं का औसत स्कोर सरकारी विद्यालयों की छात्राओं की तुलना में अधिक है। p-मूल्य 0.01 या 0.001 से कम होने के कारण समूह-अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। समग्र सशक्तिकरण का औसत 68.4 रहा, जो अध्ययन-समूह में मध्यम से उच्च स्तर के सशक्तिकरण की ओर संकेत करता है।

तालिका 2: प्रमुख निर्धारकों और सशक्तिकरण आयामों के बीच सहसंबंध (N=320)

चर	शैक्षिक	मनोवैज्ञानिक	सामाजिक	आर्थिक	शारीरिक	समग्र
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच	0.68**	0.59**	0.51**	0.49**	0.53**	0.64**
सामाजिक-आर्थिक स्थिति	0.57**	0.41**	0.42**	0.59**	0.38**	0.48**
परिवार का समर्थन	0.61**	0.63**	0.58**	0.44**	0.53**	0.59**
शिक्षक समर्थन	0.63**	0.49**	0.43**	0.37**	0.45**	0.52**
साथियों का समर्थन	0.39**	0.54**	0.59**	0.28*	0.32**	0.46**
नेतृत्व गतिविधियाँ	0.61**	0.62**	0.60**	0.48**	0.41**	0.57**
खेल भागीदारी	0.36**	0.42**	0.41**	0.29*	0.48**	0.39**
सामुदायिक सेवा	0.32**	0.38**	0.49**	0.28*	0.31**	0.36**

** p<0.01, ** p<0.001*

तालिका 2 में विभिन्न निर्धारकों और सशक्तिकरण आयामों के बीच अधिकांश संबंध सकारात्मक और सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच, पारिवारिक समर्थन और नेतृत्व गतिविधियाँ समग्र सशक्तिकरण के प्रमुख सहसंबंधी कारक के रूप में उभरते हैं। सामाजिक-आर्थिक स्थिति विशेष रूप से आर्थिक सशक्तिकरण से जुड़ी है, जबकि साथियों का समर्थन सामाजिक सशक्तिकरण के साथ अधिक स्पष्ट संबंध दिखाता है।

© AUG 2024 | IRE Journals | Volume 8 Issue 2 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV8I2-1722929

तालिका 3: बहु-प्रतिगमन विश्लेषण — समग्र सशक्तिकरण के भविष्यवक्ता (N=320)

भविष्यवक्ता चर	मानकीकृत बीटा (β)	SE	t-मूल्य	p-मूल्य
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच	0.37	0.042	8.76	<0.001
मातृ शिक्षा स्तर	0.28	0.038	7.42	<0.001
परिवार का समर्थन	0.25	0.045	5.49	<0.001
नेतृत्व गतिविधि भागीदारी	0.22	0.041	5.21	<0.001
शिक्षक समर्थन	0.18	0.044	4.18	<0.001

$R^2 = 0.63$, समायोजित $R^2 = 0.61$, $F(5,314) = 105.23$, $p<0.001$

बहु-प्रतिगमन विश्लेषण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच सबसे मजबूत भविष्यवक्ता (β=0.37) के रूप में सामने आई। इसके बाद मातृ शिक्षा, पारिवारिक समर्थन, नेतृत्व गतिविधियों में भागीदारी और शिक्षक समर्थन का क्रम रहा। R^2=0.63 दर्शाता है कि ये चर सामूहिक रूप से समग्र सशक्तिकरण स्कोर की 63% विविधता की व्याख्या करते हैं।

तालिका 4: माँ की शिक्षा के स्तर के आधार पर सशक्तिकरण स्कोर (N=320)

माँ की शिक्षा का स्तर	N	माध्य सशक्तिकरण स्कोर	मानक विचलन	F	p-मूल्य
कोई औपचारिक शिक्षा नहीं	76	56.8	13.7	38.92	<0.001
प्राथमिक शिक्षा	92	64.1	12.1		
माध्यमिक शिक्षा	103	74.2	10.4		
उच्च शिक्षा	49	82.5	8.9		

तालिका 4 में मातृ शिक्षा और छात्राओं के सशक्तिकरण के बीच स्पष्ट क्रमिक प्रवृत्ति दिखाई देती है। जिन छात्राओं की माताएँ उच्च शिक्षा प्राप्त हैं, उनका औसत सशक्तिकरण स्कोर 82.5 है, जबकि औपचारिक शिक्षा न रखने वाली माताओं की बेटियों का औसत 56.8 है। यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण (p<0.001) है और सशक्तिकरण पर शिक्षा के अंतर-पीढ़ीगत प्रभाव को रेखांकित करता है।

तालिका 5: गहन साक्षात्कारों से प्राप्त गुणात्मक विषय-वस्तु (n=40)

विषय	उल्लेख की आवृत्ति	प्रतिनिधि उद्धरण	मुख्य निहितार्थ
आकांक्षाओं पर मातृ प्रभाव	34 (85%)	"मेरी माँ अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर सकीं, लेकिन उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि मुझे समान बाधाओं का सामना न करना पड़े। उनका दृढ़ संकल्प मुझे बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित करता है।"	सशक्तिकरण दृष्टिकोण का अंतर-पीढ़ीगत संचरण
शिक्षाविदों से परे परामर्श	29 (73%)	"मेरे गणित शिक्षक केवल समीकरणों पर ही नहीं, बल्कि करियर विकल्पों और जीवन की चुनौतियों पर भी चर्चा करते हैं। यह मार्गदर्शन मुझे वास्तविक दुनिया की समस्याओं से निपटने में मदद करता है।"	समग्र शिक्षक-छात्र संबंधों का महत्त्व

नेतृत्व अनुभव का प्रभाव	28 (70%)	"विज्ञान क्लब का नेतृत्व करने से मुझे आत्मविश्वास से अपनी राय व्यक्त करना और दूसरों को एक समान लक्ष्य के लिए संगठित करना सीखने को मिला।"	सशक्तिकरण के उत्प्रेरक के रूप में व्यावहारिक नेतृत्व अनुभव
आर्थिक साक्षरता संबंधी चिंताएँ	26 (65%)	"हम अकादमिक विषयों को अच्छी तरह सीखते हैं, लेकिन मुझे अभी भी समझ नहीं आता कि पैसे का प्रबंधन कैसे करें या वित्तीय स्वतंत्रता के लिए तैयारी कैसे करें।"	आर्थिक सशक्तिकरण से संबंधित पाठ्यक्रम में अंतर
महिला रोल मॉडल की दृश्यता	23 (58%)	"अपने समुदाय की महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में सफल होते देखकर मुझे विश्वास होता है कि मैं भी समान चुनौतियों से पार पा सकती हूँ।"	संबंधित सफलता मॉडल का महत्त्व

गुणात्मक निष्कर्षों ने मात्रात्मक परिणामों को संदर्भ प्रदान किया। मातृ आकांक्षाओं का प्रभाव, अकादमिक विषयों से परे शिक्षक मार्गदर्शन, नेतृत्व अनुभव, आर्थिक साक्षरता की आवश्यकता और दृश्यमान महिला रोल मॉडल प्रमुख विषयों के रूप में सामने आए। ये निष्कर्ष छात्राओं के सशक्तिकरण के लिए समग्र समर्थन प्रणालियों और ऐसे व्यापक पाठ्यक्रम की आवश्यकता दर्शाते हैं जो शैक्षणिक दक्षताओं के साथ जीवन-कौशल को भी संबोधित करे।

IV. परिणाम

वर्णनात्मक विश्लेषण से पूरे नमूने में सशक्तिकरण के स्तर में उल्लेखनीय विविधता पाई गई। 100-बिंदु पैमाने पर समग्र सशक्तिकरण का औसत स्कोर 68.4 (SD=12.6) था। शैक्षिक सशक्तिकरण का औसत सर्वाधिक (M=74.2, SD=10.3) तथा आर्थिक सशक्तिकरण का औसत सबसे कम (M=59.3, SD=15.7) रहा। सरकारी और निजी विद्यालयों की छात्राओं के बीच सभी सशक्तिकरण आयामों में महत्त्वपूर्ण अंतर पाए गए, और निजी विद्यालय की छात्राओं का समग्र औसत अधिक था।

मातृ शिक्षा के स्तर के अनुसार सशक्तिकरण स्कोर में स्पष्ट अंतर दिखा। माध्यमिक या उच्च शिक्षा प्राप्त माताओं की बेटियों ने प्राथमिक या बिना औपचारिक शिक्षा वाली माताओं की बेटियों की तुलना में अधिक सशक्तिकरण स्कोर प्राप्त किया ($p<0.001$)। सहसंबंध विश्लेषण ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच और समग्र सशक्तिकरण के बीच मजबूत सकारात्मक संबंध ($r=0.64, p<0.001$) दिखाया। सामाजिक-आर्थिक स्थिति का समग्र सशक्तिकरण से मध्यम सकारात्मक संबंध ($r=0.48, p<0.001$) पाया गया।

सामाजिक समर्थन तंत्र महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में उभरा। पारिवारिक समर्थन का समग्र सशक्तिकरण के साथ संबंध $r=0.59$ ($p<0.001$), शिक्षक समर्थन का $r=0.52$ ($p<0.001$) और साथियों के समर्थन का $r=0.46$ ($p<0.001$) था। पाठ्येतर गतिविधियों में नेतृत्व-उन्मुख गतिविधियों का समग्र सशक्तिकरण से मजबूत संबंध ($r=0.57, p<0.001$) पाया गया, जबकि खेल भागीदारी ($r=0.39, p<0.01$) तथा सामुदायिक सेवा का प्रभाव विशेषकर सामाजिक सशक्तिकरण ($r=0.49, p<0.001$) में दिखाई दिया।

बहु-प्रतिगमन विश्लेषण ने दर्शाया कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच, मातृ शिक्षा स्तर, पारिवारिक समर्थन, नेतृत्व गतिविधि भागीदारी और शिक्षक समर्थन का संयुक्त मॉडल समग्र सशक्तिकरण स्कोर की 63% विविधता की व्याख्या करता है। गुणात्मक डेटा ने इन सांख्यिकीय संबंधों को स्पष्ट किया। छात्राओं ने पारिवारिक प्रोत्साहन, शैक्षिक निर्णय लेने की स्वतंत्रता, शीघ्र विवाह के दबाव से सुरक्षा, अकादमिक मार्गदर्शन से आगे बढ़कर शिक्षक परामर्श तथा समान पृष्ठभूमि की शिक्षित महिलाओं को रोल मॉडल के रूप में महत्त्वपूर्ण बताया।

V. चर्चा

निष्कर्ष दर्शाते हैं कि पटना में उच्चतर माध्यमिक छात्राओं का सशक्तिकरण संस्थागत, पारिवारिक और व्यक्तिगत कारकों की परस्पर क्रिया से निर्मित होता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच सबसे मजबूत एकल भविष्यवक्ता के रूप में सामने आई, जो सेन के क्षमता दृष्टिकोण के अनुरूप है। समान विद्यालयी परिवेश में पढ़ने वाली छात्राओं के बीच सशक्तिकरण में पाया गया अंतर पारिवारिक संदर्भ, विशेषकर मातृ शिक्षा, की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। शिक्षित माताएँ अपनी बेटियों को प्रत्यक्ष समर्थन के साथ सकारात्मक भूमिका मॉडल भी प्रदान करती हैं।

सामाजिक समर्थन का प्रभाव बंडुरा के सामाजिक-संज्ञानात्मक सिद्धांत से भी मेल खाता है, जिसमें सामाजिक अधिगम और प्रोत्साहन को आत्म-प्रभावकारिता विकास का महत्त्वपूर्ण माध्यम माना गया है। पारिवारिक समर्थन का प्रभाव साथियों की तुलना में अधिक होना यह संकेत करता है कि बिहार के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में परिवार-केंद्रित दृष्टिकोण विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है।

पाठ्येतर गतिविधियों के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि गतिविधियों की संख्या से अधिक उनकी प्रकृति और गुणवत्ता महत्त्वपूर्ण है। नेतृत्व-अवसरों का स्पष्ट प्रभाव इस धारणा को समर्थन देता है कि निर्णय लेने, जिम्मेदारी निभाने और समूह का नेतृत्व करने के वास्तविक अवसर छात्राओं में एजेंसी और आत्मविश्वास विकसित करते हैं। अतः विद्यालयों में सामान्य गतिविधि-भागीदारी से आगे बढ़कर संरचित नेतृत्व अनुभव उपलब्ध कराना अधिक प्रभावी हो सकता है।

नीतिगत स्तर पर निष्कर्ष तीन दिशा सुझाते हैं। पहला, शिक्षक व्यावसायिक विकास में विषय-ज्ञान के साथ परामर्श कौशल और लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण को समाहित किया जाना चाहिए। दूसरा, किशोर छात्राओं के लिए लक्षित नेतृत्व-विकास कार्यक्रमों में निवेश आवश्यक है। तीसरा, मातृ शिक्षा और पारिवारिक समर्थन की भूमिका को देखते हुए बहु-पीढ़ीगत तथा परिवार-केंद्रित हस्तक्षेप प्रभावी हो सकते हैं। सीमित संसाधनों वाले विद्यालयों में परिवार की सहभागिता बढ़ाने वाली पहल तुलनात्मक रूप से कम लागत में उपयोगी परिणाम दे सकती हैं।

अध्ययन की कुछ सीमाएँ भी हैं। क्रॉस-सेक्शनल डिज़ाइन कारणात्मक निष्कर्षों को सीमित करता है। शहरी फोकस ग्रामीण संदर्भों तक सामान्यीकरण को प्रतिबंधित करता है। स्व-रिपोर्ट उपायों में संभावित पक्षपात हो सकता है, यद्यपि गुणात्मक डेटा के साथ त्रिकोणीकरण से व्याख्या की विश्वसनीयता बढ़ती है। भविष्य के अध्ययन अनुदैर्ध्य डिज़ाइन, ग्रामीण नमूने और विशिष्ट सशक्तिकरण निर्धारकों को लक्षित प्रयोगात्मक हस्तक्षेपों पर केंद्रित हो सकते हैं।

VI. निष्कर्ष

अध्ययन से अनुभवजन्य रूप से स्पष्ट होता है कि पटना की उच्चतर माध्यमिक छात्राओं का सशक्तिकरण गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक पहुँच, सहायक पारिवारिक वातावरण और सार्थक नेतृत्व अवसरों के संयुक्त प्रभाव से विकसित होता है। सामाजिक-आर्थिक कारक महत्त्वपूर्ण हैं, किन्तु माताओं और शिक्षकों के साथ सहायक संबंध संसाधन-संबंधी बाधाओं के प्रभाव को आंशिक रूप से कम कर सकते हैं। इसलिए छात्राओं के सशक्तिकरण के लिए ऐसी बहुआयामी पहल आवश्यक है जो शैक्षिक गुणवत्ता, परिवार की सहभागिता, सामाजिक समर्थन और नेतृत्व-विकास को एक साथ संबोधित करे।

बिहार के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में, जहाँ पारंपरिक लैंगिक मानदंड अभी भी छात्राओं के शैक्षिक अनुभवों को प्रभावित करते हैं, परिवार-केंद्रित कार्यक्रम और विद्यालय-आधारित नेतृत्व अवसर विशेष रूप से प्रभावशाली हो सकते हैं। इस प्रकार, शैक्षिक पहुँच को वास्तविक और स्थायी सशक्तिकरण में परिवर्तित करने के लिए क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुरूप नीति एवं कार्यक्रम विकसित करना आवश्यक है।

संदर्भ

[1] नंदा, पी., दत्ता, पी., एवं दास, एस. (2020)। बिहार में लड़कियों की शिक्षा और शादी की उम्र पर सशर्त नकद हस्तांतरण का प्रभाव। जर्नल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, 58(4), 673–692।

[2] शर्मा, ए., एवं सुजाता, के. (2019)। किशोरियों के बीच निर्णय लेने वाली एजेंसी: माध्यमिक शिक्षा की भूमिका। इंडियन जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज, 26(1–2), 49–78।

[3] पटेल, आर. (2021)। बिहार में माध्यमिक विद्यालय की लड़कियों के बीच स्कूल छोड़ने के पैटर्न को समझना।

© AUG 2024 | IRE Journals | Volume 8 Issue 2 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV8I2-1722929

इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 56(18), 45–52।

[4] गुप्ता, वी. (2021)। पटना के माध्यमिक विद्यालय कक्षाओं में लिंग गतिशीलता: एक अवलोकन अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 12(2), 187–203।

[5] सेन, ए. (2003)। क्षमता विस्तार के रूप में विकास। एस. फुकुदा-पार एवं ए. के. शिव कुमार (सं.) में, मानव विकास में रीडिंग (पृ. 3–16)। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

[6] बंडुरा, ए. (2001)। सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत: एक एजेंटिक परिप्रेक्ष्य। मनोविज्ञान की वार्षिक समीक्षा, 52, 1–26।

[7] कबीर, एन. (1999)। संसाधन, एजेंसी, उपलब्धियाँ: महिला सशक्तिकरण के मापन पर विचार। विकास और परिवर्तन, 30(3), 435–464।

[8] पांडे, एल., एवं मित्रा, एस. (2020)। लड़कियों की शैक्षिक आकांक्षाओं में माताओं की भूमिका: बिहार और झारखंड से साक्ष्य। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 55(9), 53–61।

[9] क्रेसवेल, जे., एवं प्लानो क्लार्क, वी. (2018)। मिश्रित पद्धति अनुसंधान को डिज़ाइन करना और संचालित करना (तीसरा संस्करण)। सेज प्रकाशन।

[10] बरुआ, एम., एवं गोस्वामी, आर. (2021)। किशोर लड़कियों के सशक्तिकरण में कारक के रूप में शिक्षक-छात्र संबंध: पूर्वी भारत में एक मिश्रित-पद्धति अध्ययन। शिक्षण और शिक्षक शिक्षा, 96, अनुच्छेद 103187।

[11] देसाई, एस., एवं एंड्रिस्ट, एल. (2010)। भारत में लिंग स्क्रिप्ट और विवाह की उम्र। जनसांख्यिकी, 47(3), 667–687।

[12] कुमार, आर. (2021)। किशोरियों की आत्म-प्रभावकारिता पर नेतृत्व कार्यक्रमों का प्रभाव: बिहार में एक अर्ध-प्रायोगिक अध्ययन। जर्नल ऑफ एडोलेसेंट रिसर्च, 36(2), 319–345।

[13] मुरलीधरन, के., एवं प्रकाश, एन. (2017)। साइकिल से स्कूल जाना: भारत में लड़कियों के लिए माध्यमिक विद्यालय में नामांकन में वृद्धि। अमेरिकन इकोनॉमिक जर्नल: एप्लाइड इकोनॉमिक्स, 9(3), 321–350।